आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:19-09-14

अपने ज्ञान से हमें आत्म-अभिमानी और कर्मबन्धन मुक्त बनाने वाले, ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - वास्तव में सैलवेशन आर्मी तो तुम हो जो हर एक को सैलवेज करते हो. अभी सब आत्माये 5 विकारों की जंजीरों में है तुम लाइट हाउस बन उनको लिबरेट होने का रास्ता बताते हो तो जैसे उनको सैलवेज करते हो.

बाबा ने आज हम बच्चों को चलता-फिरता लाइट हाउस और रुहानी सैलवेशन आर्मी का टाइटल देकर, उमंग उत्साह में लाकर हमें देही-अभिमानी बनने का और बाप को याद करने के लिए प्रोत्साहित किया जिसे की हम बच्चे तीव्र पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को पावन बनाये. बाबा ने आज सारी मुरली में हमें उमंग-उत्साह दिलाने और बाप को याद करने के लिए जो भी महावाक्य उच्चारण कीये उसे ही एक बार फिरसे याद करें.

- जहॉ मिलेट्री खड़ी होती है वह फिर कहते है अटेन्शन, उन लोगों का अटेन्शन माना साइलेन्स. यहॉ भी तुमको बाप कहते हैं अटेन्शन अर्थात एक बाप की याद में रहो. बाप की श्रीमत मिलती है, तुमने आत्मा को भी पहचाना है, बाप को भी पहचाना है तो बाप को याद करने बिगर तुम विकर्माजीत अथवा सतोप्रधान पवित्र नहीं बन सकते.

- मूल बाप ही यह है, बाप कहते हैं मीठे-मीठे लाडले बच्चों! अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो.

- बाबा कहते है, तुम हो अन्डरग्राउन्ड मिलेट्री. तुम भी गुम हो जाते अर्थात बाप की याद में लीन हो जाते हो. कोई पहचान न सके क्योंकि तुम गुप्त हो ना. तुम्हारी याद की यात्रा भी गुप्त है, सिर्फ बाप कहते है मुझे याद करो क्योंकि बाप जानते हैं याद से इन बिचारों का कल्याण होगा.

- बाप ने समझाया है - तुमको लाइट हाउस भी कहा जाता है. बाप को भी लाइट हाउस कहा जाता है. तुम्हारी एक आँख में शांतिधाम और दूसरी आँख में सुखधाम को रखो. उठते, बैठते, चलते तुम लाइट होकर रहो. सबको सुखधाम-शांतिधाम का रास्ता बताते रहो.

- बाप कहते है, वास्तव में सैलवेशन आर्मी भी तुमको कहा जाता हैं. तुम सब आत्माओं को ५ विकारों की जंजीरों से मुक्त होने का रास्ता बतलाते हो, जैसे दुखी आत्माओं को सैलवेज करते हो. बाप कहते है इस याद की यात्रा से तुम पार हो जायेंगे.

- बाप कहते है, बच्चे अपने को रुहानी मिलेट्री जरूर समझो. तुम जानते हो हम आत्मा हैं, हमारा धर्म ही शान्त है. अभी तुमको यह ज्ञान मिलता है. ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटतें हैं.

- बाप कहते है, तुम समझते हो - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं. हमको शरीर से डिटैच हो बैठना है. यहॉ तुमको वह बल मिलता है जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो.

- बाप ने कहा है ना - हे अर्जुन, इन सबको छोड़ो.....सतगुरु मिला तो इन सबकी दरकार नहीं. सतगुरु तारता है. बाप कहते हैं - मैं तुम्हें इस आसुरी संसार से पार ले जाता हूँ.

- बाप को कहा जाता है - प्राणेश्वर बाबा अर्थात प्राणों का दान देने वाला बाबा, वह अमर बना देते हैं. प्राण आत्मा को कहा जाता है. आत्मा निकल जाती है तो कहते हैं प्राण निकल गये. आत्मा बिगर तो शरीर में ही बांस हो जाती है.

- यहॉ आकर जब बैठते हो तो अटेन्शन. बुद्धि बाप में लगी रहे. तुम्हारा यह अटेन्शन सदा के लिए है. जब तक जीना है, बाप को याद करना है. याद से ही जन्म-जन्मांतर के पाप कटते हैं.

- बाप कहते है, तुम जब यहॉ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का स्वदर्शन चक्र फिरना चाहिए. तुम लाइट हाउस हो ना. यह है दुखधाम, तुम्हारी एक आंख में है दुखधाम, दूसरी आंख में है सुखधाम. उठते-बैठते अपने को लाइट हाउस समझो. जो भी मिले उसको सुखधाम और शांतिधाम का रास्ता बतावो.

ॐ शांति.